ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 316-319
www.allresearchjournal.com
Received: 17-02-2017
Accepted: 18-03-2017

अनुराग भगत
रिसर्च स्कॉलर, स्पेनिश, पुर्तगाली, इटैलियन और लैटिन अमेरिकी अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence
अनुराग भगत
रिसर्च स्कॉलर, स्पेनिश, पुर्तगाली, इटैलियन और लैटिन अमेरिकी अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

गोन्साल्वेज़ डियास और उनकी मातृभूमि

अनुराग भगत

सार
यह कार्य गोन्साल्वेज़ डियास की जीवनी और उनके कार्य को समझने का प्रयास कर रहा है, विशेष रूप से उनकी कविता 'निर्वासन के गीत' पर यह कार्य केन्द्रित है जो सांस्कृतिक अध्ययन के संधर्व में कवि की स्थिति के बारे में विचार रखता है। यह अध्ययन निर्वासन से उत्पन होने वाली विभिन्न परिस्थितियों की समीक्षा करता है, जिसमें कवि का स्थान विशेष के प्रति उनके वक्तिगत अनुभव शामिल है। यह सत्यापित करता है कि कैसे राष्ट्र के निरूपण में गोन्साल्वेज़ डियास का लेखन, निर्वासन के दोहरे दृष्टिकोण से बना हुआ है जिसके वह खुद एक गवाह है।

मुख्य शब्द: निर्वासन, पहचान, प्रतिनिधित्व, राष्ट्रवाद, गोन्साल्वेज़ डियास।

प्रस्तावना
ब्राजील की स्वच्छंदतावाद और उसकी अध्ययन के कई सदियों बाद गोनसाल्वेस दियास का नाम सामने आता है जो की निर्वासन और राष्ट्रवाद की बात करते है। गोन्साल्वेज़ डियास अपने 'निर्वासन के गीत' के लिए प्रसिद्ध है, उनकी भूमिका स्वदेशी प्रेम, राष्ट्रयता की भावना और मातृभूमि के प्रति आगाद प्रेम को बढ़ावा देने का कार्य करती है। हालाँकि, नए विचार संस्कृति और पहचान के मुद्दों पर शुरू किया गया है। नई गतिशीलता ब्राजील की पहचान के निर्माण में निर्णायक क्षणों में नया दृष्टिकोण बनाता है। सीमाओं के विलय और वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ हमे यह ज्ञात होता है कि आखिर क्या होता है सांस्कृतिक पहचान के संधर्व में, ब्राज़ीलियन, लैटिन अमेरिकन या यूरोपियन होना।

इस संबंध में यह अध्ययन मुख्य रूप से बीसवीं शताब्दी पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसका कारण है पलायन और निर्वासन की विभिन्न घटनाएँ जो उस समय की तस्वीर दिखा रही थी, परिवहन और संचार के साधनो के विकास के द्वारा। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि, पिछली सदियों में, विस्थापन के विभिन्न स्तिथियों को हम सोलहवीं शताब्दी के 'ऐज ऑफ़ डिस्कवरी' के माध्यम से और उन्नीसवीं शताब्दी, के परिवहन के साधनो में विकास को लेकर देख सकते है।

इसके अलावा, उन्नीसवीं शताब्दी में यह अवधारणा विकसित हुई जिसके द्वारा लोगो की शारीरिक और व्यवहारिक पहलुओं के माध्यम से लोगों के पहचान करने की मांग का पहलू सामने आता है, और जिसने निर्णायक अभ्यावेदन को प्रभावित किया जैसे की स्वयं और अन्य, राष्ट्रीय और विदेशी, "आदिम" और "सभ्य"।

इसी संदर्भ में, गोन्साल्वेज़ डियास अपने जीवन के छोटे से अन्तराल में (10 अगस्त, 1823 से नवंबर 3, 1864 तक) विभिन्न स्थानों की यात्रा की। अपने जीवन का बहुत समय उन्होंने जहाज से भ्रमण करने में बिता। यूरोप या रियो डी जनेरियो के लिए मारेन्हो से यात्रा करना लगभग एक समय लेता था। इन समुद्री अवागमनो ने कवि को नए विचारों के प्रति ध्यान केंद्रित किया जिसमे स्वमं की पहचान और राष्ट्रीय पहचान जैसे तत्व शामिल थे। स्वच्छंदतावाद ऐसा एक सांस्कृतिक आंदोलन था जिसने उन्हें प्रोत्साहित किया दो पहचान को विलय करने के लिए।

इस निबंध में, प्रस्तावित है उनकी जीवनी और उनके ग्रंथों के माध्यम से एक संक्षिप्त अध्यन जो 'भाग्य की विडंबना' के साथ मिश्रित है। कविताओं के माध्यम से जो की निर्वासन के साथ संबंधित है, उन्हें उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन के प्रकाश में विश्लेषण करना, और स्टुअर्ट हॉल, एडवर्ड सईद और दूसरे लेखक जैसे की रेनातो ओर्तीज़, अंटोनिओ कैंडिडो की मदद से जिन्हें ब्राज़ीलियन कल्चर की जानकारी है, मैं लेखक द्वारा दर्शाये गए निर्वासन के विभिन स्वरूपो को उनके निहित स्थान विशेष से जोड़कर उनका आंकलन करना चाहता हूँ।

जिन परिस्थितियों में गोंजाल्विस डायस पैदा हुए थे, उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। हमे यह ज्ञात होना चाहिए कि गोंजाल्विस एक मेस्तिज़ो भी थे।1 उनका जन्म कैसियस शहर में हुआ था, जो की लुसिथानियन आबादी द्वारा मुख्य रूप से बसा हुआ था। वे शासक वर्ग के थे और उनका वाणिज्य, कृषि, पशुधन, चर्च और शिक्षा के क्षेत्र में बोलबाला था। व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पुर्तगाल के साथ सुगम्य था। अमीर व्यापारियों के बच्चों पुर्तगाल में अध्ययन किया करते थे। गोंजाल्विस डायस और उनके सहपाठि जॉन दुआर्ते लिस्बोआ सेरा और अलेक्जेंडर टॉफीलो डे कार्वाल्हो को भी पुर्तगाल में अध्ययन करने का अवसर मिला। कैसियस शहर के निवासियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि पुर्तगाल के निवासी वहाँ बसना चाहते थे। पुर्तगाली लोग वहाँ बसने के लिए आने लगे और इसी बीच गोंजाल्विस डायस के पिता मानुएल डायस को शहर छोड़ने की चेतावनी मिली।

"Assim, para além da situação de separação física da pátria que enfrentará mais tarde – que, por si só é uma potencial geradora de nacionalismo" 'इस प्रकार, मातृभूमि से शारीरिक वियोग की स्थिति में, जो आगे जा कर एक इंसान को सामना करना पड़ता है, यह अपने आप में राष्ट्रवाद की भावना को जगाता है' । (Said, 2003, p.146) यह मार्ग कवि के व्यक्तिगत अनुभवो द्वारा था जिसे वह उपनिवेश और उपनिवेशवादी के निरूपण के बीच एक मिश्रण मानते है। गोंजाल्विस डायस के लिए यह दुविधा का समय था क्योंकि भारतीय और पुर्तगाली दोनों राष्ट्रयाताओ को संम्मान देते थे।

एक व्यक्ति के रूप में गोंजाल्विस डायस के लिए ब्राजील-पुर्तगाल का रिश्ता निश्चित रूप से बहुत जटिल था। जब गोंजाल्विस छोटे थे वे कोइम्ब्रा चले गए थे, वहाँ वे यूरोपीय रूमानियत के संपर्क में आये और अतीत की सुरम्य मॉडल की खोज से राष्ट्रीय संस्कृति की स्थापना के लिए प्रयास किया। यूरोप अपनी मध्य काल को पार कर चुका था लेकिन ब्राजील नहीं। "Sabendo que uma cultura nacional necessita de mitos para sobreviver, e que os mitos requerem narrativas de gênese" 'यह जानते हुए कि एक राष्ट्रीय संस्कृति को जीवित रहने के लिए मिथकों आवश्यकता होती है, और मिथकों को उत्पत्ति के आख्यान का प्रयोजन होना चाहिए (Hall,

2006,p.174), गोंजाल्विस डायस और उस काल के अन्य ब्राजील के बुद्धिजीवियों के पास कोई विकल्प नहीं था अपितु उन्होंने मूल तत्व को तलाशना और भारतीयता का अनुमान करना ही उचित समझा। यह ब्राजील के लोगों के लिए रहस्यमय था कि साम्राज्य के पुनर्गठन और पुनर्निर्माण में रुचि रखते हुए विचारों को ब्राजील की ऐतिहासिक और भौगोलिक संस्थान से कैसे जोड़े और भारतीयों पर दस्तावेज और अध्ययन करने के लिए कैसे प्रयास करे। इस प्रकार ब्राजील राष्ट्र के इतिहास का जन्म हुआ जिसने अपने प्रतीकात्मक तत्व को चुना।

डियास पत्रो द्वारा अपने विचार प्रकट किया करते थे। डायस का मानना था कि टूपी और अफ्रीकी भाषाओं का हस्तक्षेप ब्राजील पुर्तगाली भाषाओं में एक तरफ समृद्धि पंहुचा रहा था और दूसरी तरफ मतभेद भी पैदा कर रहा था। वे अपने समय के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने संक्रमण की अवधि, साहित्यिक उपनिवेश और सांस्कृतिक सीमाओं को धुंधला होते हुए देखा।

तथ्यों के कालानुक्रमिक क्रम को देखते हुए, डियास जब कोइम्ब्रा में पढ़ रहे थे, वहाँ उन्हें आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके यात्रा से पहले उनके पिता की मृत्यु हो गई थी और उनकी सौतेली माँ थी जो उनकी आर्थिक सहायता कर रही थी। ब्लाइडआ के समय ये राशि भी बंद हो गई। डाइस सिर्फ अपनी दोस्तों की आर्थिक मदद से विश्वविद्यालय में ठहर पा रहे थे। यही कारन था की, उस समय कवि के पत्रो में हमे दो तरह का अभिवेदन दिखाई देता है एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। पहला, जिसका अनुभव ख़राब की रहा है खास कर के जगह को ले कर के और दूसरा, जब कुछ दिन वहाँ बीत चुका था। जैसा की मानुएल बँड़ेरा ने कहा "É que só lhe sorria à imaginação o que lhe ficava longe, no tempo ou no espaço." 'केवल कल्पना ही है जो दूर चला जाता है समय या स्थान से' (Dias, 1998, p.18).

कवि का पुर्तगाल से संबंध उभयभावी था। कभी कभी वे देश के बारे में कहते थे कि "यह देश पिताओं का देश है" और कभी कभी कहते थे "एक शापित और कड़वा देश" है। इस प्रकार, 1845 में पुर्तगाल से लौटने के बाद डायस ने कहा: "Triste foi a minha vida de Coimbra – que é triste viver fora da pátria, subir degraus alheios – e por esmola sentar-se à mesa estranha. (…) Mas ser desconhecido – ou mal conhecido, mas sentir dores d'alma, mas viver e morrer sem nome (…) é mais triste ainda." 'कोइम्ब्रा में मेरा जीवन दुखदाई था- यह दुख की बात है अपने देश से बाहर रहना, दूसरे लोगों के कदमो के पीछे चलना और अजनबी मेज पर बैठना (...)। अज्ञात होना, कम पहचान बनाये रखना, आत्मा के दर्द को महसूस करना, यह सब दुख देता है, लेकिन बिना नाम के जीवन जीना और भी दुख पहुँचाता है।' (Dias, 1998, p.1041)

चार साल बाद, वह अपने जीवन के इसी अवधि को निम्नलिखित शब्दों में बताते है: "Os mais alegres anos de minha juventude correram-me em Portugal, – lá me ficaram amigos que me pesa de ter deixado talvez para sempre; e não sem saudades me posso agora recordar dos sítios que vi, das pessoas que amei e da terra que me foi como uma segunda pátria." 'मेरी जवानी के हर्षित वर्ष, पुर्तगाल में थे - वहाँ जुदा होने तक कुछ लोग हमेशा मेरे दोस्त बने रहे। और अब बिना किसी देरी के क्या मैं याद कर सकता हूँ उन स्थानों को जिन्हें मैंने देखा है, उन लोगों को जिन्हें मैंने प्यार किया है और वो भूमि जो मुझे एक दूसरे देश के रूप में याद आती है' (Dias, 1998, p.1068).

डियास के पत्र को प्राप्त करने वाले उनके पुर्तुगाली कवि दोस्त मरनहौ टेओफिलो लेअल और जोआओ डी अलबिओम को अनुमान था कि किस तरह का अनुभव डियास को हुआ होगा कोइम्ब्रा में रह कर, मगर समय के साथ और भी पहलुओं का पता चलता है। यह और भी दुःख की बात होती यदि डियास कोइम्ब्रा में नहीं पढ़ते, क्योंकि बिना वहाँ पढाई किए यह संभव नहीं था कि वे एक कुशल कवि बन पाते । डियास को हम 'ब्राज़ील के पहले कवि' के रूप में जानते है "o Primeiro Poeta do Brasil" (Pereira, 1943, p.85), और सन 1843 ईस्वी में, कोइम्ब्रा में, वे 'निर्वासन के गीत' नाम की कविता लिखते है । 'निर्वासन के गीत' के पाठ से हमे डियास को एक कवि के रूप में समझने का

अवसर मिलता है। डियास ने यह कविता पुर्तुगाली भाषा में लिखी है जिसका मैंने हिन्दी में अनुवाद इस प्रकार किया है :

निर्वासन के गीत

मेरे देश में खजूर के पेड़ है
जहाँ चिड़ियाँ गाती है।
पक्षी जो यहाँ गीत गाते है
वहाँ इस तरह नहीं गाते।

हमारे आसमान में कई सितारों है,
हमारे घाटियों में कई फूल है।
हमारे जंगलों में भरपूर जीवन है,
हमारे जीवन में भरपूर प्यार है।

रात में, अकेले, स्वपन दीखते समय
मैं स्वयं को वहाँ देखता हूँ और बहुत खुश होता हूँ
मेरे देश में खजूर के पेड़ है
जहाँ चिड़ियाँ गाती है।

मेरा देश सुंदरता से भरपूर है
यह सुंदरता यहाँ दिखाई नहीं देती है,
रात में, अकेले, सपने देखते समय
मैं स्वयं को वहाँ देखता हूँ और बहुत खुश हो जाता हूँ
मेरे देश में खजूर के पेड़ है
जहाँ चिड़ियाँ गाती है।

भगवान, ये कभी नहीं हो
कि मैं मर जाऊँ बिना वापस लौटे
बिना सुंदरता को देखे
जो मुझे यहाँ पर नहीं दिखाई देती
बिना खजूर के पेड़ देखे
जहाँ चिड़ियाँ गाती है।

ग्रन्थसूची

1. Bandeira, Manuel. A Vida e a Obra do Poeta. In: Dias, Gonçalves. Poesia e Prosa
2. Completas. 1. ed. Rio de Janeiro: Nova Aguilar, 1998.
3. Candido, Antonio. Formação da literatura brasileira: (momentos decisivos). 6. Ed. V. 1 e 2. Belo Horizonte: Itatiaia, 2000.
4. Fernandes, Florestan. A organização social dos Tupinambá. São Paulo: Hucitec, 1989.
5. Grizoste, Weberson Fernandes. Gonçalves Dias e a Procura da Identidade Nacional Brasileira. Brasiliana – Journal for Brazilian Studies. V. 2, N. 2, p. 371-400, Nov. 2013.
6. Hall, Stuart. A identidade cultural na pós-modernidade. Tradução de Tomaz Tadeu da Silva e Guacira Lopes Louro. 11. ed., Rio de Janeiro: DP&A, 2006.
7. Lima, Henrique de Campos Ferreira. Gonçalves Dias em Portugal. Coimbra: Coimbra Editora, 1942.
8. Ortiz, Renato. Cultura brasileira e identidade nacional. 5. ed., São Paulo: Brasiliense, 1994.
9. Ricardo, Cassiano. O indianismo de Gonçalves Dias. São Paulo: Conselho Estadual de Cultura, 1964.
10. Said, Edward. Reflexões sobre o exílio e outros ensaios. Tradução de Pedro Maia Soares. São Paulo: Companhia das Letras, 2003.
11. Tuan, Yi-Fu. Espaço e Lugar: a perspectiva da experiência. Tradução de Lívia de Oliveira. São Paulo: Difel, 1983.